B.Tech ने दी 'बेचैनी'

GBTU के 10वें convocation समारोह में मेडल पाने के बाद भी उदास थे students, कहा, UP में नहीं है इंजीनियर्स के लिए बेहतर opportunity

lucknow@inext.co.in

LUCKNOW (5 Jan): इंजीनियर बनने के लिए चार साल तक की जी तोड़ मेहनत. मेहनत के दम पर टॉपर बने. गोल्ड मेडल से भी नवाजे गए. चेहरे पर खुशी और आंखों में चमक थी. मगर ये खुशी और आंखों की चमक कुछ देर बाद काफुर हो गई. शनिवार को गौतमबुद्ध टेक्निकल यूनिवर्सिटी का 10वां कन्वोकेशन था. यहां मौजूद स्टूडेंट्स मेडल और डिग्री पाने के बाद खुश तो थे मगर उन्हें बेहतर अपॉर्च्यूनिटी न मिल पाने का मलाल था. स्टूडेंट्स का कहना था कि बी-टेक करने के बाद भी उन्हें फ्यूचर का डर सता रहा है. उनका कहना था कि यूपी में अभी भी इंजीनियर्स के लिए कोई जगह नहीं है. न तो यहां पर इंजीनियरिंग की पढ़ाई का स्तर अच्छा है और न ही जॉब की अपार संभावनाएं हैं.

चूर हो गए सपने

नोएडा के गलगोटिया इंस्टीट्यूट के बीटेक स्टूडेंट और सिल्वर मेडलिस्ट राजकिशोर पाल का दर्द भी कुछ कम नहीं है. राजकिशोर का कहना था कि बीटेक की सफलता के लिए खुशी जरूर है लेकिन अब एमटेक या पीजी करने की इच्छा नहीं है. उनका कहना है कि बीटेक कंप्लीट करने के बाद अच्छे पैकेज पर जॉब पाने का सपना देखा था. मैंने मेहनत की उसके लिए मेडल भी मिला लेकिन काफी दौड़ भाग के बाद भी अच्छी जॉब नहीं मिली. उनका कहना है कि यूपी में अब भी बी-टेक करने के बाद भविष्य सुरक्षित नहीं कहा जा सकता.

माथे पर थी फ्यूचर की टेंशन

शनिवार को जीबीटीयू का 10वां कन्वोकेशन था. पंडाल में इंजीनियरिंग के महारथी जमा थे. एक तरफ कुलपति यूपीटीयू की उपलब्धियों को गिना रहे थे तो दूसरी ओर बैठे मेडलिस्ट्स के चेहरे पर चिंता की लकीरें देखने को मिल रहीं थीं, क्योंकि इनमें से ज्यादातर लोग अपना फ्यूचर डिसाइड नहीं कर पा रहे थे. बीबीडी एमबीए की टॉपर नेहा शुक्ला ने बताया कि एमबीए करने के बाद सोचा था कि एक अच्छी जॉब मिल जाएगी लेकिन मशक्कत के बाद भी जॉब नहीं मिली. इसलिए अब पीओ की तैयारी में जुटी हूं. मेडल हासिल करने वाले टॉपर्स का कहना था कि यूपी में कॉलेज तो हर रोज खुलते जा रहे हैं. मगर स्टूडेंट्स को बेहतर इंजीनियर बनाने के लिए सुविधाएं नहीं हैं.

"गर्ल्स किसी से पीछे नहीं रहती हैं. मगर कई बार कुछ कारणों से हम लोगों को पीछे हटना पड़ता है. जिस दिन दामिनी के आरोपियों को सजा मिलेगी उस दिन हमको रियल मेडल मिलेगा.

डॉ. अर्चना समीर मेहरोत्रा
पीएचडी

"रिसर्च में कामयाबी से मैं जितना खुश हूं उससे ज्यादा दुखी दामिनी को लेकर हूं. ऐसी घटना दोबारा न हो इसके लिए सरकार को जल्द से जल्द कड़ा कानून बनाना होगा.

प्रशांत द्विवेदी
पीएचडी

जॉब अपॉर्च्यूनिटी के लिए परेशान थे स्टूडेंट्स

दीक्षांत समारोह में मेडल से नवाजे गए स्टूडेंट्स

इनको मिला गोल्ड मेडल

- अंशू सिंह बीटेक इलेक्ट्रानिक बीबीडी एनआईसी लखनऊ
- कृति श्रीवास्तव बीटेक इंस्ट्रूमेन्टेशन इंजीनियरिंग एसआरएमसीएम लखनऊ
- स्मिता गुप्ता बीटेक इलेक्ट्रानिक इंजीनियरिंग बीबीडी एनआईसीटीएम लखनऊ
- मनोज कुमार यादव बीटेक मैकेनिकल इंजीनियरिंग बीबीडी एनआईटीएम लखनऊ
- राघव सागर टीपी सिंह एमबीए शेरवुड कालेज ऑफ इंजीनियरिंग लखनऊ
- कृति मेहरोत्रा बीआर्क बीबीडी एनआईटी लखनऊ
- आशीष वर्मा बीटेक सिविल केएमआईटी सुल्तानपुर
- निवेदिता सिंह बीटेक कम्प्यूटर साइंस केजीईसी कानपुर
- सोनम गुप्ता बीटेक टेक्सटाइल यूपीटीटीआई कानपुर
- अश्वनी कुमार सिंह बीटेक एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग एसआईटीएम अलीगढ़
- स्नेहा सेन बीटेक केमिकल इंजीनियरिंग एमआईईटी मेरठ
- निकिता सारस्वत बीफार्मा पीएसआईटी कानपुर
- आकांक्षा गुलाटी बीएचएमसीटी आईआईएमटीएचएमसी मेरठ
- कनुप्रिया जैन एमसीए एमआईईटी मेरठ
- वन्दना वर्मा बीएफएडी वीआईएफटी मेरठ

Teacher देते हैं students को पंख

कैमरे में कैद किये पल

LUCKNOW (5 Jan, i next): 'एक टीचर स्टूडेंट्स को विंग्स और रूट्स देता है. विंग्स के जरिए स्टूडेंट्स आसमान को छूता है और रूट्स इसलिए देता है ताकि वह अपने रास्ते से भटके नहीं.' यह बात शनिवार को सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस जीएस सिंघवी ने जीबीटीयू के 10वें दीक्षांत समारोह को सम्बोधित करते हुए कही. उन्होंने कहा कि वे स्टूडेंट्स जो आज डिग्री लेकर बाहर निकल रहे हैं. यह उनकी जिम्मेदारी है कि वह समाज के अशिक्षित वर्ग को आगे लेकर आएं. उनको समाज की मुख्य धारा से जोड़ें. कन्वोकेशन में 52 स्टूडेंट्स को पीएचडी मिली जबकि अलग-अलग ब्रांच के 15 स्टूडेंट्स को गोल्ड और सिल्वर मेडल दिए गए. गर्वनर बीएल जोशी ने कहा यह खुशी की बात है कि इस बार रिसर्च स्कालर की गिनती बढ़ी है. टेक्नोक्रेट को चाहिए कि वह रिसर्च की फील्ड में आए.

"मेडल पाने की होड़ में आज मेरी जीत हुयी है. मगर दुख है कि दामिनी जिन्दगी से हार गयी.

प्रीती सिंह
सिल्वर मेडल